इकाई—17

विभिन्न लिपियों का स्वरूप—ज्ञान, लेखन कला की उत्पत्ति

इकाई की रूपरेखा

17.0 उद्देश्य

इस इकाई में आप भाषा विज्ञान के महत्त्वपूर्ण बिन्दु लिपि विज्ञान का परिचय प्राप्त करेंगे। लिपि के इतिहास तथा वर्तमान स्वरूप से परिचय कराना इस इकाई का उद्देश्य है।

- लिपि के विकास क्रम को जानेंगे।
- विश्व की तथा भारत की लिपियों से परिचित होंगे।
- भारतीय लिपि विज्ञान के इतिहास को जान सकेंगे।

17.1 प्रस्तावना

लिपि सम्प्रेषण का महत्त्वपूर्ण साधन है। लिपि एक विशिष्ट अक्षर क्रम का बोधक है। लिपि भाषा का स्थूल रूप है। लिपि दृश्य एवं पाठ्य है। लिपि और भाषा में साम्य यह है कि दोनों ही भावाभिव्यक्ति के साधन हैं।

वाचिक भाषा क्षणस्थायी होती है उसे स्थायित्व देने की भावना से ही लिपि का आविर्भाव हुआ। लिपि ने भाषा को देश और काल के बन्धन से मुक्त कर दिया। भाषा की उत्पत्ति की

तुलना में लिपि की उत्पत्ति बहुत बाद में हुई। लिपि का इतिहास पाँच छः हजार वर्ष पूर्व का है।

17.2 लिपि का विकास क्रम

आज लिपि का विकसित रूप हमारे समक्ष है परन्तु लिपि की विकास सोपान यात्रा के अनेक चरण हैं। वे मुख्यतः तीन हैं–

1. चित्र लिपि 2. भाव लिपि 3. ध्वनि लिपि

17.2.1 चित्र लिपिः– यह लिपि का प्राचीनतम रूप था। जिस वस्तु का वर्णन करना होता था मनुष्य उस को चित्र बद्ध कर देता था।

इसके लाभ थे– वस्तु का तुरन्त बोध सर्वजन सुबोधता और शिक्षण की अनावश्यकता। परन्तु इसके दोष अधिक हैं– 1. संकेत अनन्त बनाने पड़ते थे। प्रत्येक वस्तु के लिए पृथक् संकेत होता था। 2. व्यक्तिवाचक संज्ञाओं का बोध नहीं हो सकता था। 3. अमूर्त भाव एवं विचार प्रकट नहीं हो सकते थे। 4. ध्वनिलिपि की अपेक्षा स्थान तथा समय अधिक लगता था।

17.2.2 भावलिपिः– यह लिपि विकास का द्वितीय चरण था। चित्रलिपि के लघुतर उपाय के विकल्प रूप में भावलिपि का प्रादुर्भाव हुआ। भावलिपि में चित्रों को सरल बनाया गया और उनसे
सम्बद्ध अर्थ भो लिए गये। यथा–सूर्य के लिए एक गोला बनाना, उससे गर्मी, धूप, प्रकाश, दिन आदि का अर्थ प्रेषित करना।

समीक्षा– यह चित्रलिपि का विकसित रूप है। इससे चित्र बनाने की क्लिष्टता कुछ कम हुई। एक चित्र से अनेक अर्थ प्रकट होने लगे। यह चित्राभास लिपि हुई। परन्तु सूक्ष्म भावों की अभिव्यक्ति पूर्ववत् असंभव ही रही। किस चित्र से क्या भाव लिए जायेगें इसमें समरूपता नहीं थी।

17.2.3 ध्वनिलिपि– यह लिपि विकास का तृतीय चरण था। यह मानव की लिपि संबंधी सर्वोत्कृष्ट उपलब्धि थी। इसमें प्रत्येक ध्वनि के लिए कुछ संकेत निर्धारित किए गए। इनसे मुखोच्चारित प्रत्येक ध्वनि को लिपि बद्ध किया जा सकता है। देशकाल के भद से ये ध्वनियाँ अलग–अलग स्थानों पर अलग–अलग विकसित हुईं। इस प्रकार की लिपियाँ हैं– देवनागरी, रोमन, अरबी आदि।

विशेष बिन्दुः– कुछ विद्वानों ने ध्वनिलिपि के दो भद किए हैं 1.अक्षरात्मक 2. वर्णात्मक। अक्षरात्मक में चिह्न किसी अक्षर को व्यक्त करता है, वर्ण को नहीं। वर्णात्मक में चिह्न वर्ण को व्यक्त करता है।

17.3 भारतीय लिपि विज्ञान

भारत में प्राचीन समय से लेखन कला प्रचलित थी। ऋग्वेद ऋग्वेद में 'लेख्' धातु के अनेक रूपों का प्रयोग है। अथर्ववेद में चार स्थानों पर लिखने की कला का उल्लेख है। इसमें सुलेख, ऋण संबंधी लेख और आकृति मूलक लेख का उल्लेख है।

1. अजैषं त्वा संलिखितम। (अथर्ववेद–7–50–5) सुलेख
2. यद्यद् द्युतं लिखितमर्पणेन। (अथर्ववेद–12–3–22) लेन–देन का लेख
3. अप शीर्षण्यं लिखात्। (अथर्ववेद–14–2–68) ऊपर की रेखायें
4. क एषां कर्करी लिखत। (अथर्ववेद–20–132–8) चित्रात्मक लेख

ब्राह्मण ग्रन्थों में भो लिख् धातु के ये प्रयोग मिलते हैं– लिखति, लिखते, लिलेख, अलीलिखत, लेखी, लिखित आदि।

ऋग्वेद, यजुर्वेद, तैत्तिरीय संहिता और अथर्ववेद में 1 से 100 तक गिनती, पहाड़ा, संख्याओं के नाम मिलते हैं। इन संख्याओं का ज्ञान लेखन–कला के बिना असंभव है।

अथर्ववेद में 'अक्षर' शब्द का छोटी इकाई के रूप में उल्लेख है। इससे ही विभिन्न छन्दों की मात्राएँ और वर्ण गिने जाते थे।

17.3.1 भारतीय लेखनकला का इतिहास

1. बौद्ध ग्रन्थ, ब्रह्मजाल–सुत्त में (6ठी सदी ई.पू.) में अक्खरिका का उल्लेख है।
2. 'सुत्तान्त' (सूत्रान्त 6ठी सदी ई.पू.) भिक्षुओं को अक्खरिका न खेलने का आदेश है।
3. विनयपिटक (400 ई.पू.) में लेखन कला की प्रशंसा की गई है।
4. महावग्ग और जातकों में लेखन कला के अध्यापन और लेखन सामग्री का उल्लेख है।
5. रामायण (600ई.पू.) महाभारत (500 ई.पू.) अर्थशास्त्र (चौथी सदी ई.पू.) में अनेक स्थलों पर लेखन कला का उल्लेख है।
6. आचार्य पाणिनि (5वीं सदी ई.पू.) ने स्पष्ट रूप से लिपि, लिबि, लिपिकर ग्रन्थ, यवनानी, स्वरित चिह्न आदि का उल्लेख किया है।
7. कौटिल्य अर्थशास्त्र में लिपि का उल्लेख है। कौटिल्य ने सांकेतिक लिपि के लिए संज्ञालिपि नाम दिया है।
8. बौद्ध ग्रन्थ ललितविस्तर में 64 लिपियों के नाम हैं। जैन ग्रन्थ पन्नवणा–सूत्र तथा समवायाङ्ग सूत्र में 18 लिपियों के नाम हैं। इनमें महत्त्वपूर्ण लिपियाँ हैं–

   1. बंभो (ब्राह्मी) 2. खराट्ठी (खरोष्ठी) 3. जवणनिया (यवनानी) 4. अंकलिपि 5. गणितलिपि 6. काहेसरी (माहेश्वरी) 7. हूण लिपि 8. चीनलिपि 9. दरदलिपि 10 द्राविड़ी लिपि

17.3.2 अभिलेख साक्ष्यः– प्राचीन शिलालेखों आदि से भारत में प्राचीनकालिक लेखन कला का ज्ञान होता है।

1. मोहनजोदड़ो आर हड़प्पा के अभिलेखों का समय 4 हजार ई.पू. के लगभग माना जाता है। 2. अशोक के शिलालेखों से पूर्व के छोटे–छोटे अभिलेख मिले हैं। इससे स्पष्ट होता है कि ई.पू. 6वीं या 7वीं सदी में भारत में लेखन कला एवं लिपि का विस्तृत प्रचार था।

17.3.3 खरोष्ठी लिपि

खरोष्ठी लिपि यह भारतीय लिपि है इसका प्रचलन पश्चिमोत्तर भारत में था। अशोक के अभिलेख इसी भाषा में है। अशोक के शिलालेखों के अतिरिक्त भारत यूनानी सिक्के, शक और कुषाणों के अभिलेख भो खरोष्ठी लिपि में हैं।

खरोष्ठी का नामकरण– इसके नामकरण के विषय में अनेक मत प्रचलित हैं–

1. खरोष्ठ नामक व्यक्ति या आचार्य ने इसका आविष्कार किया।
2. गधे की खाल पर लिखी जाने से ईरानी में उसको 'खरपोश्त' कहते थे। उसका अपभश खरोष्ठ है। इससे खरोष्ठी बनी।
3. डॉ. राजबली पाण्डेय के मतानुसार इस लिपि के अक्षर खर (गधा) के ओष्ठ के समान बेढंग होते थे, अतः खरोष्ठी नाम बना।
4. डॉ. सुनीतिकुमार चटर्जी के अनुसार हिब्रू में लेख–वाचक खरोशेथ शब्द है। उससे खरोष्ठी बना।

खरोष्ठी की उत्पत्ति– इस विषय में मुख्यतया दो मत हैं–

1. यह आर्मेइक लिपि से निकली है।

2. यह भारतीय लिपि है।

इस विषय में प्रसिद्ध लिपिवेत्ता प्रो. ब्यूलर का मत अधिक प्रामाणिक माना जाता है। उन्होंने प्रथम मत के समर्थन के लिए चार तर्क दिए हैं–

1. खरोष्ठी लिपि आर्मेइक लिपि के तुल्य दाएँ से बाएँ लिखी जाती है।
2. खरोष्ठी के 11 अक्षर बनावट की दृष्टि से आर्मेइक लिपि के अक्षरों से बहुत मिलते हैं। दोनों की इन ध्वनियों में भो साम्य है। ये 11 अक्षर हैं– क,ज,द,न, ब,य,र,व,ष,स,ह।
3. आर्मेइक लिपि खरोष्ठी से प्राचीन है।
4. तक्षशिला में आर्मेइक लिपि के शिलालेख भो मिले हैं। यह खरोष्ठी का क्षेत्र है। श्री राजबली पाण्डेय का मत (यह भारतीय लिपि है) केवल तर्कों पर आश्रित है, अतः ग्राह्य नहीं हुआ है। इसकी उत्पत्ति किसी भारतीय भाषा से नहीं हुई है।

खरोष्ठी की विशेषताएँ तथा न्यूनताएँ

1. यह दाएँ से बाएँ लिखी जाती है। बाद में संभवतः ब्राह्मी के प्रभाव से बाएँ से दाएँ भो लिखी जाने लगी।
2. इसमें 37 वर्ण हैं– 5 स्वर और 32 व्यंजन। स्वर–अ, इ, उ, ए, ओ। व्यंजन– क, ख, ग, घ। च, छ, ज, झ, ञा। ट, ठ, ड, ढ, ण। त, थ, द, ध, न। प, फ, ब, भ, म। य, र, ल, व। श, ष, स, ह। इसमें दीर्घ स्वर –आ, ई, ऊ, ऐ, औ और ङ व्यंजन नहीं है
3. आर्मेइक लिपि में केवल 22 अक्षर थे। उनको 37 बनाना खरोष्ठ मुनि या आचार्य का काम है।
4. खरोष्ठी में हस्व और दीर्घ मात्राओं का अन्तर नहीं है। इसमें संयुक्त अक्षरों को लिखने की भो स्पष्ट सुविधा नहीं है अतः यह भारत में 200 ई. के बाद नहीं चल सकी।

17.3.4 ब्राह्मी लिपि

यह पूर्णतया भारतीय लिपि है इसके प्राचीनतम लेख 350 ई.पू. से लेकर 300ई. तक मिलते हैं। इसके पश्चात् अशोक के शिलालेख और स्तम्भ लेख आदि हैं। ब्राह्मी लिपि में 41 अक्षर थे, 9 स्वर और 32 व्यंजन

स्वर–अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ

व्यंजन– क, ख, ग, घ। च छ ज झ ञा। ट ठ ड ढ ण। त थ द ध न। प फ ब भ म। य र ल व। श ष स ह।

इससे ज्ञात होता है कि ब्राह्मी में खरोष्ठी से 4 ध्वनियाँ अधिक हैं– आ ई ऊ ऐ।

ब्राह्मी का नामकरण– ब्राह्मी नाम के लिए 3 व्युत्पत्तियाँ बताई गई हैं–

1. ब्रह्मा से उत्पन्न हुई है।
2. ब्रह्मा (वेद या ज्ञान) की रक्षा के लिए इसे बनाया गया।
3. ब्राह्मणों ने इसे बनाया या प्रयुक्त किया।

इन तीनों मतों में प्रथम मत अधिक उचित प्रतीत होता है। ब्रह्मा से सम्बद्ध ज्ञान आदि को ब्राह्म या ब्राह्मी कहा जाता था। यजुर्वेद (अ. 31 मन्त्र 20,21) में ब्रह्म से सम्बद्ध अर्थ मे ब्राह्मी का प्रयोग मिलता है। इस भाषा का प्रयोग वेद–ज्ञान की रक्षा के लिए किया गया।

17.3.5 ब्राह्मी लिपि की भारतीयता के कारण–

1. विश्व की किसी भाषा में स्वरों और व्यंजनों का इस प्रकार का क्रम नहीं है।
2. इसमें केवल भारतीय ध्वनियों का समावेश है।

3. संयुक्त वर्णों को स्पष्ट रूप में सूचित करना ब्राह्मी की विशेषता है।
4. स्वर की मात्राओं को व्यंजन के साथ जोड़ने की विशेषता केवल ब्राह्मी में है।
5. स्वर और व्यंजन के इतने पूर्ण संकेत अन्य किसी भाषा में नहीं हैं।
6. कोई भारतीय परम्परा इस लिपि को बाहरी नहीं मानती।
7. अंक प्रणाली और दशमलव की पद्धति भारतीयों की वैज्ञानिकता की प्रतीक हैं। जो ऋषि अंक प्रणाली का आविष्कार कर सकते हैं, वे वर्ण लिपि का भो आविष्कार कर सकते हैं।
8. ब्राह्मी में वर्णों की जो गोल रचना या वृत्तात्मकता है, वह अन्य किसी लिपि में नहीं है।

बाह्मी से भारतीय लिपियों का विकास

ईसा पूर्व 350 से लेकर 300 ई तक प्रयुक्त लिपि का नाम ब्राह्मी रहा। इसके पश्चात् ब्राह्मी लिपि के लिखने के दो प्रकार मिलते हैं। जिनके आधार पर ब्राह्मी की दो श्रेणियाँ मानी जाती हैं– 1. उत्तरी 2. दक्षिणी।

17.4 विभिन्न लिपियों का स्वरूप ज्ञान

17.4.1 विश्व की लिपियों का चतर्विध विभाग :– विश्व में प्रचलित लिपियों को देखते हुए उनके चार स्वतंत्र उद्‌गम स्वीकार किये जा सकते हैं–

1. भारतीय
2. यूरोपीय
3. सामी
4. चीनी

इन चारों में इतना स्पष्ट पार्थक्य है कि इन्हें एक स्रोत से सम्बद्ध मानना असंगत है। सम्भव है कि किसी लिपि के एक दो संकेत किसी दूसरी लिपि में भो आ गये हों परन्तु इतने से ही उनमें जन्य–जनक भाव की कल्पना नहीं की जा सकती।

1. ब्राह्मी लिपि से भारत की सभो लिपियाँ निकली हैं, यह इतिहास सिद्ध है।
2. यूरोप की सभो लिपियाँ अल्पाधिक परिवर्तन के साथ ग्रीक लिपि का ही रूपान्तर हैं।
3. सामी से उद्भ्त् अरबी, फारसी आदि लिपियाँ पश्चिमी एशिया के आस–पास प्रयुक्त होती रही हैं।
4. चीन की लिपि इन सबसे विलक्षण आज भो बहुत कुछ चित्रात्मक हैं।

विश्व की प्राचीन लिपियों को वर्णमाला के आधार पर दो वर्गों म बाँटा जाता है– 1. वर्णमाला रहित 2. वर्णमाला युक्त

वर्णमाला–रहित लिपियाँ	**वर्णमाला–युक्त लिपियाँ**
1. क्यूनीफॉर्म (कीलाक्षर) लिपियाँ	1. सामी, आर्मेइक, फोनीशियन, हिब्रू
2. हीरोग्लाइफिक	2. अरबी लिपि
3. क्रीटी लिपि	3. ग्रीक (यूनानी) लिपि
4. सिन्धु घाटी लिपि	4. लैटिन (रोमन) लिपि
5. हिटाइट लिपि	5. खरोष्ठी लिपि

6. चीनी लिपि 6. ब्राह्मी लिपि

1. **क्यूनीफॉर्म लिपि**– इसको कीलाक्षर, कोणाक्षर, तिकोनी, बाणाक्षर आदि कहते हैं। इसमें रेखाएँ प्रायः कोण वाली हैं। खड़ी, पड़ी लकीरें हैं। यह भावमूलक लिपि थी। यह ऊपर से नीचे और दाएँ से बाएँ लिखी जाती थी, बाद में बाएँ से दाएँ भो लिखी जाने लगी।

2. **हीरोग्लाइफिक लिपि**– इसको गूढाक्षर, बीजाक्षर, चित्राक्षर, पवित्राक्षर आदि कहते हैं। इसका मूल अर्थ था–खुदे हुए पवित्र अक्षर। मन्दिरों की दीवारों आदि पर लेख खोदने में इसका प्रयोग होता था। यह पहले चित्रात्मक थी, फिर भावात्मक हुई और अन्त में अक्षरात्मक हुई।

3. **क्रीटी लिपियाँ**– ये आज तक नहीं पढ़ी जा सकी हैं। ये लिपियाँ क्रीट के अभिलेखों में मिलती हैं। ये दोनों प्रकार की हैं– चित्रात्मक और रेखात्मक। चित्रात्मक में 135 चित्र मिलते हैं, रेखात्मक में 90 चिह्न। रेखात्मक लिपि बाएँ से दाएँ लिखी जाती थी। यह 1200 ई.पू. में समाप्त हो गई।

4. **सिन्धु घाटी लिपि**– यह भारतीय लिपि है। इसके प्राचीन अवशेष सिन्धु घाटी से मिले हैं। इनमें विभिन्न प्रकार के चिह्न हैं। इस लिपि को भावलिपि और ध्वनिलिपि का संगम कह सकते हैं।

5. **हिटाइट लिपि**– इसके हजारों कीलाक्षर और चित्रात्मक अभिलेख सीरिया और एशिया माइनर में बोगाजकोई से मिले हैं। यह मूलतः चित्रात्मक थी। बाद में कुछ भावात्मक और कुछ ध्वन्यात्मक हो गई।

6. **चीनी लिपि**– चीनी किंवदन्ती के अनुसार फू–हे नामक एक व्यक्ति ने 3200 ई.पू. में इस लिपि का आविष्कार किया था। चीनी लिपि में अक्षर या वर्ण नहीं हैं। यह चित्रात्मक लिपि है। प्रत्येक शब्द के लिए अलग चिह्न हैं। इन चिह्नों को 4 भागों में बाँटा जा सकता है– 1. चित्रात्मक 2.संयुक्त चित्रात्मक 3. भावात्मक 4. ध्वन्यर्थ–संयुक्त।

7. **सामी, आर्मेइक, फोनीशियन, हिब्रू लिपियाँ**– सामी भाषा परिवार की एक सामी लिपि थी। इसमें 22 वर्ण थे। इसकी दो शाखाएँ हुईं– उत्तरी सामी लिपि और दक्षिणी सामी लिपि। उत्तरी सामी लिपि से दो लिपियाँ विकसित हुईं– आर्मेइक (या अरमी) और फोनीशियन (फोनीशी) दक्षिणी सामो लिपि से दक्षिणी अरबी और अरबी लिपि का विकास हुआ

8. **अरबी लिपि**– इसका विकास सामी लिपि की दक्षिणी शाखा से हुआ है। इसके दो रूप हैं– दक्षिणी अरबी और अरबी। अरबी में कुल 28 अक्षर हैं। यह दाएँ से बाएँ लिखी जाती हैं

9. **ग्रीक (यूनानी) लिपि**– इसको यूनानी लिपि भो कहते हैं। यूरोप की वर्तमान सभो लिपियाँ ग्रीक लिपि से ही विकसित हुई हैं। ग्रीक में सामी की 3 विशेषताएँ हैं–

   1. ग्रीक अक्षरों के स्वरूप में साम्य
   2. सामी के तुल्य क्रम
   3. सामी के तुल्य अधिकांश अक्षरों के नाम।

   ग्रीक लिपि में 24 चिह्न हैं। यह बाएँ से दाएँ लिखी जाती है।

10. **लैटिन या रोमन लिपि**– लैटिन को ही रोमन लिपि भो कहते हैं। यह आज संसार की सबसे महत्त्वपूर्ण लिपि है। विश्व के अधिकांश देशों में इसका प्रचलन है। रोम वालों ने एत्रुस्कन भाषा के माध्यम से ग्रीक लिपि प्राप्त की। उसका की विकसित रूप लैटिन या रोमन लिपि है। उपयोगिता की दृष्टि से इसे सर्वोत्तम लिपि माना जाता

है। अतएव इसका प्रचार यूरोप के अतिरिक्त अन्य देशों में भो हो गया है। इसमें कुछ मौलिक त्रुटियाँ हैं। जैसे– 1. कुछ अक्षर व्यर्थ हैं बुग। 2. कुछ ध्वनियों के लिए चिह्न नहीं हैं, जैसे श्, थ्, ड्, च् आदि। इनके लिए दो ध्वनियों को मिलाकर काम चलाया जाता है– sh th ng ch आदि। 3. एक ध्वनि के लिए अनेक चिह्न हैं। अ के लिए a, i, u, o, a bird, but, come. 4. एक ध्वनि के अनेक उच्चारण हैं चनजए इनजए। 5. ह्रस्व और दीर्घ के अन्तर के लिए अक्षर नहीं है।

17.5 पारिभाषिक शब्दावली

चित्र लिपिः– यह लिपि का प्राचीनतम रूप था। जिस वस्तु का वर्णन करना होता था मनुष्य उस को चित्र बद्ध कर देता था।

खरोष्ठी –खरोष्ठी लिपि यह भारतीय लिपि है इसका प्रचलन पश्चिमोत्तर भारत में था। अशोक के अभिलेख इसी भाषा में है। 3. डॉ. राजबली पाण्डेय के मतानुसार इस लिपि के अक्षर खर (गधा) के ओष्ठ के समान बेढंग होते थे, अतः खरोष्ठी नाम बना।

ब्रह्मणी –यह पूर्णतया भारतीय लिपि है यह.ब्रह्मा से उत्पन्न हुई है।

क्यूनीफॉर्म लिपि– इसको कीलाक्षर, कोणाक्षर, तिकोनी, बाणाक्षर आदि कहते हैं। इसमें रेखाएँ प्रायः कोण वाली हैं।

हीरोग्लाइफिक लिपि– इसको गूढाक्षर, बीजाक्षर, चित्राक्षर, पवित्राक्षर आदि कहते हैं। इसका मूल अर्थ था–खुदे हुए पवित्र अक्षर।

क्रीटी लिपियाँ– ये आज तक नहीं पढ़ी जा सकी हैं। ये लिपियाँ क्रीट के अभिलेखों में मिलती हैं। ये दोनों प्रकार की हैं– चित्रात्मक और रेखात्मक।

17.6 अभ्यासार्थ प्रश्न

1. लिपि के विकास की अवस्थायें हैं–

   (क) पाँच (ख) आठ (ग) तीन (घ) छः

2. चित्रलिपि की प्रमुख कठिनाई है–

   (क) समय साध्यता (ख) चित्राभास लिपि

   (ग) वर्णमाला राहित्य (घ) अक्षरात्मक

3. लिपि भाषा का............. रूप है–

   (क) स्थूल (ख) सूक्ष्म (ग) अमूर्त (घ) अनावश्यक

4. लिपि सम्बन्धी सर्वोत्कृष्ट उपलब्धि है–

   (क) चित्र लिपि (ख) सूक्ष्म लिपि (ग) भावलिपि (घ) ध्वनिलिपि

5. पश्चिमोत्तर भारत में जिस लिपि का प्रचलन था–

   (क) ब्राह्मी (ख) लैटिन (ग) हिब्रू (घ) खरोष्ठी

6. खरोष्ठी के नामकरण के विषय में प्रचलित किन्हीं दो मतों का उल्लेख कीजिए।

7. ब्राह्मी लिपि की भारतीयता के कारणों का कथन कीजिए।

बोध प्रश्नों के उत्तर

1. ग 2. क 3. क 4. घ 5. घ

6. द्रष्टव्य 16.3.3

7. द्रष्टव्य 16.3.4–5

17.7 सारांश

इस इकाई में आपने 'लिपि' से सम्बन्धित पाठ का अध्ययन किया। लिपि की उपयोगिता और लिपि विकास से परिचित कराना ही इस अध्याय का उद्देश्य है।

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आप–

- लिपि के इतिहास तथा विकास क्रम को अभिव्यंजित कर सकते हैं।
- विश्व की वर्णमाला रहित तथा वर्णमाला युक्त लिपियों से परिचय हो गया है।
- खरोष्ठी लिपि तथा ब्राह्मी लिपि के नामकरण और विशेष बिन्दुओं की व्याख्या कर सकते हैं।
- देवनागरी लिपि की सिद्धान्ततः उपयोगिता जान सकते हैं।
- ब्राह्मी की उत्तरी और दक्षिणी शैली से उद्भत लिपियों का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।
- भारतीय लिपि विज्ञान के इतिहास को जान सकेंगे।

17.8 संदभ ग्रंथ सूची

1. तुलनात्मक भाषा विज्ञान– डॉ. पाण्डुरंग दामोदर गुणे, मोतीलाल बनारसीदास, 1963.
2. संस्कृत भाषाविज्ञान– राजकिशोर सिंह, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा,1986.
3. Introduction to Sanskrit Philology – बटुकृष्णघोष, मुन्शीराम मनोहरलाल,नई दिल्ली,1943.
4. भाषाविज्ञान,भोलानाथ तिवारी,किताब महल,इलाहाबाद,1951.
5. भाषाविज्ञान एवं भाषा शास्त्र, डॉ. कपिल देव द्विवेदी,विश्वविद्यालय प्रकाशन,वाराणसी,2002.